

## ख्याति की परिभाषाएँ

(Definitions of Goodwill)

संस्था द्वारा अधिक लाभ कमाने की क्षमता ख्याति कहलाती है। ख्याति की विभिन्न परिभाषाएँ दी गयी हैं। इनमें से निम्नांकित प्रमुख हैं—

डिक्सी के अनुसार, "जब एक व्यक्ति ख्याति के लिए कुछ राशि देता है तो वह राशि इसलिए देता है कि ऐसा करने से वह इतनी अधिक आय प्राप्त करेगा जितनी कि वह बिना इसके प्राप्त नहीं कर सकता।"

मोरिसे के अनुसार, "ख्याति एक फर्म के अनुमानित अधिक उपार्जन का वर्तमान मूल्य है।"

आर० विक्सन के अनुसार, "ख्याति एक व्यावसायिक उपक्रम से सम्बन्धित सभी अनुकूल गुणों का मूल्य है।"

ख्याति के लक्षण—(1) ख्याति अदृश्य सम्पत्ति है, (2) स्थापित व्यवसाय को बेचने पर ही ख्याति का बाजार मूल्य प्राप्त होता है, (3) ख्याति की सही लागत ज्ञात करना कठिन है, (4) ख्याति का निष्पक्ष मूल्यांकन सम्भव नहीं है, (5) व्यवसाय में ख्याति क्रय की गई हो सकती है, (6) अधिलाभ की मात्रा ख्याति के मूल्य को प्रभावित करती है।

ख्याति के उपार्जन के कारण—(1) व्यापार-गृह की लाभदायक स्थिति, (2) ग्राहकों की मनोवैज्ञानिक अभिरुचि, (3) स्वामी का अच्छा व्यक्तित्व, (4) माल की गुणवत्ता, (5) एकाधिकार की स्थिति, (6) राजनैतिक स्थिति।

ख्याति की अवधारणाएँ—(1) लेखांकन अवधारणा, (2) आर्थिक अवधारणा, (3) कानूनी अवधारणा।

ख्याति का स्वभाव अथवा प्रकृति—(1) बिल्ली के स्वभाव की, (2) कुत्ते के स्वभाव की, (3) चूहे के स्वभाव की, (4) खरगोश के स्वभाव की।

ख्याति के मूल्य को प्रभावित करने वाले घटक

(अ) व्यापारिक घटक—(1) व्यवसाय के भवन का स्थान, (2) व्यवसाय की अवधि, (3) जोखिम, (4) उत्पाद की गुणवत्ता, (5) लाभार्जन क्षमता, (6) अनुकूल प्रसंविदे, (7) उचित मूल्य, (8) ग्राहकों से अच्छे सम्बन्ध।

(ब) प्रबन्धकीय घटक—(1) प्रबन्धकों की व्यक्तिगत छवि, (2) श्रेष्ठ विक्रय प्रबन्धन, (3) संसाधनों की निरन्तर खोज।

(स) औद्योगिक घटक—(1) औद्योगिक शान्ति, (2) उत्पादन का वैकल्पिक उपयोग, (3) व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा।

(द) वित्तीय घटक—(1) पूँजी की मात्रा, (2) वित्तीय संस्थाओं का रुख, (3) विनियोक्ताओं का रुख, (4) मुद्रा बाजार का अनुकूल रुख।

(य) राजनैतिक घटक—(1) राजनैतिक दलों का रुख, (2) आयात-निर्यात नीति, (3) कर नीति, (4) सरकारी संरक्षण, (5) राजनैतिक स्थिरता।

(र) सामाजिक घटक—(1) उत्पाद के प्रति जनता का लगाव, (2) सामाजिक तथा आर्थिक कार्य।

### ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता अथवा मूल्यांकन की दशाएँ

(अ) एकल व्यापार की दशा में—(1) व्यवसाय को बेचने पर, (2) साझेदारी फर्म में बदलने पर, (3) अनिवार्य अधिग्रहण की दशा में।

(ब) साझेदारी फर्म की दशा में—(1) नये साझेदार के प्रवेश पर, (2) साझेदार के अवकाश ग्रहण तथा मृत्यु की दशा में, (3) फर्म को कम्पनी में बदलने पर, (4) एकीकरण की दशा में, (5) साझेदारों के लाभ-हानि अनुपात में परिवर्तन होने पर, (6) साझेदारी व्यवसाय की बिक्री पर।

(स) कम्पनी की दशा में—(1) एकीकरण की दशा में, (2) कम्पनी पर नियन्त्रण करने के लिए उसके अधिक अंश क्रय करने पर, (3) अंशों के मूल्यांकन की दशा में।

### ख्याति के सम्बन्ध में लेखांकन मानकों के सम्बन्धित प्रावधान

(Relevant Provisions of the Accounting Standards on Goodwill)

1. लेखांकन मानक—10(AS-10) के अनुसार ख्याति का लेखांकन लेखा पुस्तकों में नहीं होता है। इस लेखा मानक के अनुसार ख्याति को लेखा पुस्तकों में उसी स्थिति में प्रदर्शित करना चाहिए जब उसके लिए भुगतान किया गया हो।

2. लेखांकन मानक—14(AS-14) के अनुसार क्रय पद्धति के आधार पर एकीकरण (Amalgamation) की दशा में हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी की क्रय की गई शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य से अधिक प्रतिफल होने पर आधिक्य को हस्तान्तरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में एकीकरण से उत्पन्न ख्याति के रूप में दर्शाना चाहिए। इस लेखा मानक के अनुसार ख्याति की राशि को अधिकतम 5 वर्षों में अपलिखित किया जाना चाहिए, जब तक कि इससे अधिक लम्बी अवधि को उपयुक्त न ठहराया जाये।

3. लेखांकन मानक—21(AS-21) के अनुसार सूत्रधार कम्पनी की दशा में यदि विनियोग की तिथि पर सहायक कम्पनी में सूत्रधार कम्पनी के विनियोग की लागत सहायक कम्पनी में सूत्रधार कम्पनी के समता के भाग से अधिक होती है तो इस आधिक्य को ख्याति कहा जाता है और समेकित वित्तीय विवरण में इसे एक सम्पत्ति के रूप में दर्शाया जाता है, परन्तु आन्तरिक सृजित ख्याति को एक सम्पत्ति के रूप में मान्य नहीं किया जायेगा।

4. लेखांकन मानक—26(AS-26) के अनुसार क्रय की गई ख्याति को लेखा पुस्तकों में सम्पत्ति के रूप में मान्यता दी जाती है।

### ख्याति के मूल्यांकन की विधियाँ

(1) औसत लाभ विधि—इस विधि के अनुसार पिछले कुछ वर्षों के लाभों को जोड़कर इस जोड़ में वर्षों की संख्या से भाग देने पर जो राशि आती है उसे औसत लाभ कहा

जाता है। इस औसत लाभ में कुछ वर्षों (अधिकतर दो या तीन) का गुणा करने पर जो राशि आती है, वह ख्याति की राशि कहलाती है।

$$(1) \text{ औसत लाभ की गणना} = \frac{\text{गत वर्षों के लाभ का योग}}{\text{वर्षों की संख्या}} = \text{औसत लाभ}$$

(2) ख्याति की गणना—औसत लाभ  $\times$  क्रय वर्षों की संख्या

(3) औसत लाभ की गणना करते समय सावधानियाँ—(1) असामान्य लाभ को घटा देना चाहिए तथा असामान्य हानि को जोड़ देना चाहिए, (2) आवर्ती असमायोजित आय व्यय का समायोजन, (3) भविष्य के आय व्यय का समायोजन, (4) पूँजीगत आय व्यय का समायोजन, (5) प्रबन्धकीय पारिश्रमिक का यदि पुस्तकों में लेखा नहीं किया गया है तो उसे लाभों में से घटाया जाएगा।

उदाहरण 1—

एक कम्पनी को निम्नलिखित सूचनाओं से पिछले 4 वर्षों के औसत शुद्ध लाभ के 3 वर्ष के क्रय मूल्य के आधार पर ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए। कम्पनी के लाभ/हानि इस प्रकार हैं—

प्रथम वर्ष : लाभ—रुपये 1,00,000; द्वितीय वर्ष : लाभ—रुपये 1,40,000;  
तृतीय वर्ष : लाभ—रुपये 1,30,000; चतुर्थ वर्ष : हानि—रुपये 10,000

Solution :

$$\text{Total Profit of Last 4 years} = ₹ 1,00,000 + 1,40,000 + 1,30,000 - 10,000 \text{ (Loss)}$$

$$= ₹ 3,60,000$$

$$\text{Average profit of last 4 years} = \frac{₹ 3,60,000}{4}$$

$$= ₹ 90,000$$

$$\text{Goodwill} = ₹ 90,000 \times 3 \text{ years} = ₹ 2,70,000$$

उदाहरण 2—

सूर्या लि० के व्यवसाय के सम्बन्ध में निम्नांकित सूचनाएँ उपलब्ध हैं—

(i) लाभ = 2010 में ₹ 40,000; 2011 में ₹ 50,000; 2012 में ₹ 60,000। (ii) 2011 के लाभ में बार-बार न होने वाली ₹ 4,000 की आय शामिल है। (iii) 2010 के लाभ में ₹ 6,000 कम हो गये हैं, क्योंकि माल आग से नष्ट हो गया था। (iv) माल का बीमा नहीं कराया गया है, परन्तु भविष्य में इसके बीमा कराने का विचार है और बीमा प्रीमियम ₹ 400 प्रतिवर्ष का अनुमान है। (v) व्यवसाय के स्वामी का उचित पारिश्रमिक ₹ 6,000 प्रतिवर्ष है जिसे उपर्युक्त लाभ निकालने के लिए प्रयोग नहीं किया गया है। (vi) 2012 के लाभ में ₹ 5,000 गैर-व्यापारिक विनियोगों की आय शामिल है। गत तीन वर्षों के औसत लाभ के 2 वर्ष के क्रय के आधार पर ख्याति की गणना कीजिए।

Solution :

Statement Showing Adjusted Net Profit

	2010	2011	2012
Profit	₹ 40,000	₹ 50,000	₹ 60,000

Less : Non-recurring income	—	4,000	—
Add : Goods destroyed (Abnormal loss)	6,000	—	—
Less : Income from Investment	—	—	5,000
Adjusted Net Profit	46,000	46,000	55,000

$$\text{Average Profit} = \frac{\text{₹ } 46,000 + 46,000 + 55,000}{3} = \frac{\text{₹ } 1,47,000}{3} = \text{₹ } 49,000$$

Less : Expenses to be paid in future :

Insurance Premium	400	
Proprietor's Remuneration	6,000	- 6,400
Net Average Profit expected in future		<u>42,600</u>

$$\text{Goodwill} = \text{₹ } 42,600 \times 2 \text{ year's purchase} = \text{₹ } 85,200$$

(2) अधिलाभ विधि ( Super Profit Method)—अधिलाभ से आशय उस लाभ से होता है जो एक व्यवसायी अपने समकक्ष दूसरे व्यवसायी द्वारा अर्जित लाभ की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त करता है। इसमें ख्याति की गणना विधि निम्नांकित प्रकार है—

(a) औसत लाभ की गणना—(गणना विधि को औसत लाभ विधि में समझाया गया है)

(b) सामान्य लाभ की गणना—विनियोजित अथवा औसत विनियोजित पूँजी × सामान्य प्रत्यायु दर/100

(c) अधिलाभ की गणना—औसत लाभ - सामान्य लाभ

(d) ख्याति की गणना—अधिलाभ × क्रय वर्षों की संख्या

(e) विनियोजित अथवा औसत विनियोजित पूँजी की गणना—

विनियोजित पूँजी—कुल स्थायी सम्पत्तियाँ + चालू सम्पत्तियाँ - चालू एवं दीर्घकालीन दायित्व = विनियोजित पूँजी

औसत विनियोजित पूँजी—औसत विनियोजित पूँजी की गणना निम्नलिखित में से किसी भी सूत्र के द्वारा की जा सकती है—

(i) प्रारम्भिक विनियोजित पूँजी + अन्तिम विनियोजित पूँजी/2

(ii) प्रारम्भिक विनियोजित पूँजी + चालू वर्ष में अर्जित लाभ का 1/2

(iii) अन्तिम विनियोजित पूँजी - चालू वर्ष में अर्जित लाभ का 1/2

उदाहरण 3—

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर ख्याति का मूल्यांकन अधिलाभ विधि से कीजिए।

(i) व्यापार में नियोजित औसत पूँजी 6,00,000 रुपये।

(ii) फर्म में पिछले तीन वर्षों के व्यापारिक लाभ इस प्रकार थे—(1,07,600 रुपये, 90,700 रुपये और 1,12,500 रुपये)

(iii) जोखिम के आधार पर अनुमानित व्याज की दर 12 प्रतिशत प्रति वर्ष।

(iv) साझेदारों को उनकी सेवाओं के प्रतिफलस्वरूप उचित पारिश्रमिक 12,000 रुपये वार्षिक, जो अभी तक लाभ-हानि खाते में समायोजित नहीं किया गया है।

Solution :

Simple Super Profit Method :		₹
Calculation of Average Annual Profit :		
Profit for the 1st year		1,07,600
Profit for the 2nd year		90,700
Profit for the 3rd year		1,12,500
		3,10,800
Less : Partner's Remuneration for three years		36,000
	₹	2,74,800
		₹
Annual Average Profits (2,74,800 ÷ 3)		91,600
Less : Normal return on Average Capital Employed		72,000
(on ₹ 6,00,000 @ 12%; $\left(\frac{6,00,000 \times 12}{100}\right)$ )		
	Super Profit ₹	19,600

As the number of years is not given in the question, 3 year's purchase of the super profit is assumed to be the value of goodwill. Thus,

$$\text{Value of Goodwill} = ₹ 19,600 \times 3 \text{ Years} = ₹ 58,800$$

(3) लाभ की पूँजीकरण विधि (Capitalisations of Profit Method)

पूँजीकरण द्वारा ख्याति निकालने की निम्नांकित दो विधियाँ हैं—

(1) औसत लाभ पूँजीकरण विधि—ख्याति की गणना का सूत्र—

$$\left( \frac{\text{वास्तविक औसत लाभ}}{\text{आय की सामान्य दर}} \times 100 \right) - \text{विनियोजित पूँजी}$$

(2) अधिलाभ पूँजीकरण विधि—ख्याति की गणना का सूत्र—

$$\left( \frac{\text{अधिलाभ} \times 100}{\text{प्रत्याय की सामान्य दर}} \right)$$

नोट—लाभ की पूँजीकरण विधि से ज्ञात किया गया ख्याति का मूल्य अन्य सभी विधियों की तुलना में सबसे अधिक होता है।

उदाहरण 4—

(A) (i) एक फर्म के औसत लाभ ₹ 40,000 हैं, (ii) सामान्य प्रत्याय की दर 10%, (iii) विनियोजित पूँजी ₹ 3,20,000 है—औसत लाभ तथा अधिलाभ के पूँजीकरण द्वारा ख्याति ज्ञात कीजिए।

Solution :

(A) (i) Capitalisation of average profit :

$$= \frac{\text{Average Profit} \times 100}{\text{Normal rate of return}}$$

$$= ₹ \frac{40,000 \times 100}{10} = ₹ 4,00,000$$

$$\text{Goodwill} = \text{Capitalised Profits} - \text{Capital Employed}$$

$$= ₹ 4,00,000 - 3,20,000 = ₹ 80,000$$

(ii) Capitalisation of super profit :

$$\text{Normal profit} = \frac{₹ 3,20,000 \times 10}{100} = ₹ 32,000$$

$$\text{Super Profit} = ₹ 40,000 - 32,000 = ₹ 8,000$$

$$\text{Goodwill} = \frac{\text{Rs. } 8,000 \times 100}{10} = ₹ 80,000$$

(4) वार्षिकी पद्धति (Annuity Method)—इस पद्धति में ख्याति के लिये वर्तमान में भुगतान की गई राशि पर ब्याज की हानि के लिये कटौती की जाती है। इसके अन्तर्गत भविष्य में प्राप्त होने वाले अधिलाभों का निश्चित ब्याज की दर से कटौती करके ज्ञात किया गया वर्तमान मूल्य ही ख्याति मूल्य होता है।

(1) अधिलाभ की दशा में—अधिलाभ × वार्षिकी का वर्तमान मूल्य (यदि यह ₹ 1 से अधिक है।)

अथवा

$$\frac{\text{अधिलाभ}}{\text{वार्षिकी का वर्तमान मूल्य}} \quad (\text{यदि वार्षिकी का वर्तमान मूल्य ₹ 1 से कम है।})$$

(2) औसत लाभ की दशा में—

$$\text{व्यवसाय का मूल्य} = \frac{\text{वास्तविक औसत लाभ}}{\text{वार्षिकी का वर्तमान मूल्य}}$$

$$\text{ख्याति} = \text{व्यवसाय का मूल्य} - \text{शुद्ध मूर्त सम्पत्तियाँ}$$

उदाहरण 5—

वार्षिकी पद्धति से ख्याति की गणना कीजिए—

(अ) 5% से चार वर्षों के लिए ₹ 0.282012 वार्षिकी का वर्तमान मूल्य रुपये 1 है तथा अधिलाभ ₹ 13,000 है।

(ब) 10% वार्षिक की दर से पाँच वर्षों के लिए रुपये 1 की वार्षिक वृत्ति का वर्तमान मूल्य रुपये 3.78 है तथा अधिलाभ रुपये 21,200 है।

(स) सामान्य लाभ की दर 10%, अधिलाभ ₹ 22,000, ख्याति की गणना अधिलाभों के तीन वर्षों के क्रय की वार्षिक वृत्ति के आधार पर करनी है।

Solution :

$$(a) \text{ Goodwill} = \frac{₹ 13,000}{0.282012} = ₹ 46,097.33$$

$$(b) \text{ Goodwill} = ₹ 21,200 \times 3.78 = ₹ 80,136$$

(c) Calculation of the present value of annuity of ₹ 1 for three years @ 10%.

$$\text{Present Value} = \frac{1 - \left( \frac{100}{100 + r} \right)^n}{\frac{r}{100}} = \frac{1 - \left( \frac{100}{100 + 10} \right)^3}{\frac{10}{100}}$$

$$\text{or } \frac{1 - \left( \frac{10}{11} \right)^3}{1/10} \text{ or } \frac{1 - 0.7513}{1/10} = \text{or } 0.2487 \times 10 = 2.487$$

$$\text{Goodwill} = ₹ 22,000 \times 2.487 = ₹ 54,714$$